IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 5, Issue 2, December 2025
Impact Factor: 7.67

प्रेमशंकर रघुवंशी के काव्य में पर्यावरण-चिन्तन

प्रो. (डॉ.) विष्णु कुमार अग्रवाल

प्रोफेसर-हिन्दी विभाग

शासकीय महारानी लक्ष्मीबाई कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय, ग्वालियर

श्रीमती गिरजेश ओझा

शोध छात्रा

जीवाजी विश्वविद्यालय, ग्वालियर (म.प्र.)

शोध सारांश—

प्रेमशंकर रघुवंशी के काव्य में पर्यावरण चिन्तन व्यापक रूप में है जिसमें सतपुड़ा, नर्मदा, विध्यांचल, के नैसर्गिक सौंदर्य को बचाये रखने की विकट विह्वलता देखने को मिलती है। हरसूद में बनाये गये बाँध से विस्थापन की त्रासदी, ग्रामीण जन-जीवन और खेती किसानी के बदलते स्वरूपतथा आदिवासी, गरीब मजदूर, किसानों आदि के दैनिक जीवन की दुरूहता का मार्मिक अंकन है। प्रदूषित होती नदियाँ, वनों की अंधाधुंध कटाई, मृदा प्रदूषण, खत्म होते प्राकृतिक जल श्रोत, तथा विलुप्त होती पशु-पक्षियों एवं जीव-जन्तुओं की दुर्लभ प्रजातियों की गहरी चिन्ता है। वहीं राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर होते युद्ध व युद्धाभ्यास से मानव जीवन क्षुब्द व अशांत है। निरंतर झेलते आघातों से धरती लहूलुहान है और आकाश क्षत-विक्षत। पर्यावरण की दृष्टि से कवि ने इन सभी मूल समस्याओं को अपने काव्य में प्रमुखता से अभिव्यक्त किया है।

मुख्य शब्द—पर्यावरण चिन्तन, प्रेमशंकर रघुवंशी, सतपुड़ा, विंध्याचल, नर्मदा, हरसूद, विस्थापन, रासायनिक हथियार, वैज्ञानिक उपकरण,आदि।

शोध का उद्देश्य—पर्यावरण के महत्व को समझना। पर्यावरण को नष्ट करने वाले घटकों को जानना तथा उसे बचाने के लिए सरकार व अनेक संस्थाओं के साथ-साथ समाज के हर व्यक्ति को अपनी जबावदेही स्वीकार कर उस पर अमल करते हुएहर प्रकार से पर्यावरण को सुरक्षित रखना।